Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 4220–4226

POPULATION GROWTH AND LITERACY RATE IN PATNA DISTRICT: A COMPARATIVE STUDY

पटना जिला में जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर: एक तुलनात्मक अध्ययन

Birendra Kumar [1], Poonam Rautela [2]

[1] Research Scholar, Department of Geography, M.B.G.P.G. College Haldwani, Kumaon University Nainital-263139
[2] Professor (Department of Geography), S.B.S. Government Post Graduate College Rudrapur Udham Singh Nagar, Uttarakhand, India

Corresponding Author

Birendra Kumar,
birendra900@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.4891

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Population growth is a natural phenomenon but its explosion creates a big problem in the whole country. The socio-economic condition of a country depends on the human resource of that country. Because the development of a nation is measured by the total population gross income rate of the whole country. Education is the main means to shape the human resource in a proper way which shapes the human ability to earn and live a happy life. It is education that takes the nation in the right direction and helps in developing the overall condition of the country. In today's society, without education, we cannot think about the welfare of an individual as well as the whole country. So population growth and literacy rate are interdependent. If literacy rate increases then population will be controlled. Because educated people are aware about the harmful effects of over population or population explosion.

Population explosion in Patna district is a big problem for the development of the state. The researcher tries to investigate the population growth and literacy rate of Patna district and its consequences. The study tries to find out the effect of literacy on controlling the population of Patna district. The study found that the increase in literacy rate is effective for controlling the population and welfare of the district and state. Because education is the only weapon to destroy the evil things from the society.

Hindi: जनसंख्या वृद्धि एक प्राकृतिक घटना है लेकिन इसका विस्फोट पूरे देश में एक बड़ी समस्या पैदा करता है। किसी देश की सामाजिक आर्थिक स्थिति उस देश के मानव संसाधन पर निर्भर करती है। क्योंकि किसी राष्ट्र का विकास पूरे देश की कुल जनसंख्या सकल आय दर से मापा जाता है। मानव संसाधन को उचित तरीके से आकार देने के लिए शिक्षा मुख्य साधन है जो मानव को कमाने और खुशहाल जीवन जीने की क्षमता का आकार देती है। यह शिक्षा ही है जो राष्ट्र को सही दिशा में ले जाती है और देश की समग्र स्थिति में विकसित करने में मदद करती है। आज के समाज में शिक्षा के बिना हम एक व्यक्ति के साथ-साथ पूरे देश के कल्याण के बारे में नहीं सोच सकते। इसलिए जनसंख्या वृद्ध और साक्षरता दर एक दूसरे पर निर्भर है अगर साक्षरता दर बढ़ेगी तो जनसंख्या नियंत्रित होगी। क्योंकि शिक्षित लोग अधिक जनंसख्या या जनसंख्या के विस्फोट के हानिकारक प्रभावों के बारे में जानते है।

पटना जिला में जनसंख्या विस्फोट राज्य के विकास के लिए बड़ी समस्या है। शोधकर्ता पटना जिला की जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता हर तथा उसके परिणामों की जांच करने का प्रयास करता है। अध्ययन में पटना जिला की जनसंख्या को निर्वाचित करने के लिए साक्षरता के प्रभाव का पता लगाने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि साक्षरता दर की वृद्धि जनसंख्या को नियंत्रित करने तथा जिला एवं राज्य के कल्याण करने के लिए प्रभावी है। क्यों शिक्षा की समाज से बुरी चीजों के नष्ट करने के एकमात्र हथियार है।

Keywords: Population Growth, Literacy Rate, Patna District जनसंख्या वृद्धि, साक्षरता दर, पटना जिला

1. प्रस्तावना

आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए जनसंख्या सबसे महत्वपूर्ण कारक है। आजकल आर्थिक विकास को केवल आय के संदर्भ में नही मापा जात है; बल्कि यह एच0डी0आई0 हैं (मानव विकास सूचकांक) जो किसी देश में इसे निर्वाचित करता है। इसके परिणामों स्वरूप किसी देश के आर्थिक विकास का स्तर केवल जनसंख्या की मात्रा पर निर्भर नहीं करता है बल्कि यह राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को आकार देने में संसाधन के रूप में कार्य करने वाली जनसंख्या पर निर्भर करता है। एच0डी0आई0 ने किसी देश में जनसंख्या और साक्षरता दर के बीच सीधा संबंध स्थापित किया है।

किसी देश की जनसंख्या को परिसंपति या दायित्व माना जा सकता है। जब कोई देश अत्यधिक जनसंख्या से ग्रसित हो और उसका एक बड़ा हिस्सा निर्भर या भार माना जाता है तो उस आश्रित जनसंख्या को दायित्व माना जाता है और इसके विपरित जब जनसंख्या शिक्षित हो तो वहीं जनसंख्या उत्पादक बन जाता है। इसलिए सरकार का यह दायित्व है कि वह जनसंख्या को शिक्षित बनाकर उत्पादक बनाये!

जनसंख्या वृद्धि एक प्राकृतिक घटना है लेकिन इसका विस्फोट पूरे देश में एक बड़ी समस्या पैदा करता है जैसे अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने की चुनौतियों, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छ पर्यावरण आदि जो किसी देश के कल्याण संबंधित है इसलिए सरकार को जनसंख्या नियंत्रण नीति से निपटने के लिए सुधारात्मक उपाय करने चाहिए। जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिए एक मात्र तरीका मंचन करना और लक्षित समूहों को जनसंख्या की खतरनाक वृद्धि के नकारात्मक प्रभाव के बारे में समझाना है। इस तरह के जैविक अंतर्ज्ञान को सफल बनाने में शिक्षा सबसे सशक्त साधन है जो लोगों की मानसिकता को बदल सकता है। साक्षरता दर जितना अधिक क्षेत्र जनसंख्या का तेजी से बड़ने को चिंता उतना ही कम होगा। इसके अलावा लोगों के बीच जागरूकता पैदा करना लोगों को इसके लिए मनाने का एक और सबसे बड़ा हथियार है।

2. अध्ययन का महत्व

जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर दो ऐसे शब्द हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जनसंख्या वृद्धि लोगों की बढ़ती संख्या को दर्शाती हैं और साक्षरता या शिक्षा लोगों की जनसंख्या वृद्धि और इसके हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूक करती है। साक्षरता दर आम तौर पर किसी राज्य के मानव संसाधनों के गुणवत्तापूर्ण विकास को दर्शाती है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के बाद लोग आमतौर पर यह सोचने में सक्षम हो जाते हैं कि कैसे एक खुशहाल जीवन जिया जाये; भविष्य की योजना बनाने की क्या जरूरत है, हमें अपने बच्चों को शिक्षित करने की जरूरत क्यों हैं इत्यादि। यह शिक्षा ही है जो हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि हम सभ्य प्राणी हैं और हमें अपने देश के सतत विकास में भाग लेना है। एक शिक्षित बच्चा निश्चित रूप से अपने घर के साथ-साथ अपने समाज को भी बदल सकता है। इससे स्पष्ट है कि देश के कल्याण में मानव संसाधनों की बहुत बड़ी भूमिका है। यह शिक्षा ही है जो उन्हें देश के लिए अपनी बड़ी मेहनत को समर्पित करने की क्षमता प्रदान करने के लिए उचित आकार प्रदान करता है। शोधकर्ता उस महत्व को देखता है और यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है कि साक्षरता की उच्च दर जनसंख्या वृद्धि की बुराइयों को दूर कर सकती है। पटना जिला में जनसंख्या वृद्धि अधिक है जो साक्षरता दर को बढ़ाने में बाधा उत्पन्न कर रही हैं इसलिए वर्तमान स्थिति में यह अध्ययन बहुत भसंगिक हैं-

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(1) पटना जिला में जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर के साथ इसके अंतर्सबंध की जांच करना!

(2) वर्तमान अध्ययन पर नीति सुझाव देना!

4. डाटा स्त्रोत और कार्यप्रणाली

अध्ययन को भसंगिक बनाने के लिए शोधार्थी ने विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया है। वर्तमान अध्ययन में मूल रूप से देश के द्वितीय स्त्रोत का उपयोग किया गया है। यह विभिन्न स्त्रोतों जैसे प्रकाशित पत्रिकाओं, पुस्तकों और कई अन्य प्रकाशनों, भारत की जनसंख्या जनगणना और भासंगिक वेबसाइटों से एकत्रित किये गये द्वितीयक डेटा पर आधारित हैं।

4.1. परिणामों और चर्चा

जनसांख्यिकी की विशेषता जनसंख्या के आकार, घनत्व, साक्षरता दर, ग्रामीण शहरी आबादी, जातिकार, आबादी आदि के संदर्भ में किसी देश का प्लान के परिदृश्य को प्रकट करती है। यह किसी विशेष स्थान के स्त्रोतों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के स्तर के बारे में भी जानकारी देती है। तालिका - 1 में 2001 से 2011 के दौरान पटना जिला के जनसंख्या परिदृश्य के बारे में बनाया गया हैं।

तालिका 1:

2001 – 2011 के दौरान पटना जिला का जनसंख्या परिदृश्य

क्रम सं	विवरण		जनगणना	
			2001	2011
1	जनसंख्या (लाख में)		47.18	58.38
2	जनसंख्या घनत्व		1473	1823
3	लिंग अनुपात		873	893
4	साक्षरता (% में)	व्यक्ति	62.91	70.67
		पुरुष	73.33	78.47
		महिला	50.83	61.96
5	शहरी जनसंख्या (% में)	व्यक्ति	78.1	80.98
		पुरुष	84.69	85.75
		महिला	70.17	75.59
6	ग्रामीण जनसंख्या (% में)	व्यक्ति	51.4	62.38
		पुरुष	64.49	72.57
		महिला	36.57	51.04
7	अनुसूचित जाति जनसंख्या(% में)		15.5	15.77
8	अनुसूचित जनजाति जनसंख्या(% में)		0.2	0.16
9	मुस्लिम जनसंख्या (% में)			7.54

तालिका: 1- पटना जिला का जनसंख्या परिदृश्य (2001-2011) पटना जिला की कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 47.18 लाख या जो 2011 में 23.73 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 58.33 लाख हो गई है। जनसंख्या घनत्व 2001 में 1473 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि0मी0 या जो 2011 में बढ़कर 1823 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 हो गया। ये पटना जिला में 2001 से 2011 के बीच तीव्र जनसंख्या वृद्धि को दिखाता है। इसके विपरित इसी अवधि के दौरान पटना जिला में लिंगानुपात 873 महिला/हजार पुरूष से 893 महिला/हजार पुरूष हो गया जो सुधार दर्शाताा है जोकि आर्थिक विकास का एक अच्छा संकेतक है। साथ ही इस अवधि के दौरान ग्रामीण आबादी की तुलना में शहरी आबादी को प्रतिशत बढ़ा है। लोग धीरे-धीरे शहरीकृत हो रहे हैं जो कृषि से कष्येतर या द्वितीयक या सेवा क्षेत्र में जनसंख्या के स्थानांतरण को दर्शाता है।

हांलांकि पटना जिला में साक्षरता दर 2001 में 62.91 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 70.67 प्रतिशत हो गया। जो पिछले दशक की तुलना मे 7.66 प्रतिशत की वृद्धि हुआ है। लेकिन दोनों दशकों में साक्षरता के मामलों में लैंगिक असमानता दिखता है। जैसे कि वर्ष 2001 में पुरूष साक्षरता दर 73.33 है जबकि महिला साक्षरता दर 50.83 प्रतिशत था वहीं वर्ष 2011 में ये बढ़कर पुरूष का साक्षरता दर 78.47 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 61.96 प्रतिशत हो गया। उपरोक्त विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि साक्षरता दर (7.66प्रतिशत) की तुलना में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर (23.73प्रतिशत) अधिक है। जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण शिक्षा सहित जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की बढ़ती मांग को पूरा करने में सरकार पर वित्तीय दबाव बढ़ रहा है। तालिका-2 में पटना जिला में 1971 से 2011 के बीच विकासखंडवार जनसंख्या के दशकीय प्रतिशत भिन्नता के बारें में जानकारी दिया गया है।

तालिका 2:

पटना जिला में विकासखंडवार दशकीय जनसंख्या परिवर्तन (1971 – 2011) प्रतिशत में

क्र.सं.	विकासखंड	1971 – 1981	1981 – 1991	1991 - 2001	2001 – 2011
1	पटना सदर	62.56	18.14	47.20	18.18
2	दानापुर	27.46	23.04	27.78	22.23
3	पालीगंज	22.75	15.50	25.15	19.71
4	बिहटा	22.56	22.50	21.09	24.12
5	मसौढी	26.00	24.88	24.01	18.70
6	मनेर	28.02	20.81	33.43	33.60
7	फुलवारी	29.68	19.45	0.44	42.99
8	धनरूआ	21.73	23.36	23.22	20.95

9	बख्तियारपुर	32.61	25.51	18.92	31.79
10	नौबतपुर	19.44	17.41	22.08	19.31
11	मोकामा	27.73	16.86	-16.12	20.45
12	बाढ़	33.15	23.82	-30.39	33.23
13	फतुहा	28.47	19.09	-32.77	29.02
14	बिक्रम	22.31	23.41	-32.89	21.80
15	पंडारक	8.04	11.48	16.29	25.15
16	पुनपुन	22.90	16.24	23.40	18.68
17	दुल्हिन बाज़ार	.....	.....	.....	20.73
18	खुसरुपूर	.....	.....	.....	36.15
19	संपतचक	.....	.....	.....	40.32
20	अथमलगोला	.....	.....	.....	31.44
21	दनियांवा	.....	.....	.....	25.95
22	घोसवारी	.....	.....	.....	31.33
23	बेल्छी	.....	.....		36.19
	जिला (योग)	34.13	19.84	30.41	23.73

स्रोत: जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1971ए 1981ए 1991ए एवं 2011

तालिका-2 घटना जिला में विकासखंडवार 1971 से 2011 के बीच जनसंख्या में दशकीय प्रतिशत मिलता है। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पटना जिला की जनसंख्या में दशकीय प्रतिशत भिन्नता 1971 से 2011 के बीच घटती हुई प्रवृत्ति दर्शाती है। यह 1971 1981 में 34.13 प्रतिशत से 2001-2011 के बीच 23.73 प्रतिशत हो गया । इस तरह स्पष्ट है कि 1971-1981 एवं 1981-1991 के दशक में जनसंख्या की वृद्धि उच्च जन्म दर के कारण थी। जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में विकासखंडवार भिन्नता से पता चलता है कि यह विकासखंडवार अलग-अलग है। कुछ विकासखंड में प्रतिशत अधिक है कुछ में कम। हालांकि बाद के दशकों में यह लगभग सभी विकासखंडों में कमी को दिखाता है। यह कमी पिछले दशक में कम जन्म दर के कारण हुआ है। अगर हम जिला की साक्षरता दर को देखते है तो यह समय के साथ धीरे-धीरे बढ़ रही है। हालांकि जनसंख्या की वृद्धि दर में भी गिरावट आई है लेकिन यह अभी भी 23 प्रतिशत से अधिक है।

1971 से 2011 के बीच पटना जिला की जनसंख्या दशकीय प्रतिशत भिन्नता चित्र-1 में दिखाया गया है।

चित्र 1- पटना जिला की जनसंख्या में (1971-2011) दशकीय प्रतिशत भिन्नता।

चित्र रूरू1 पटना जिला मे दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर

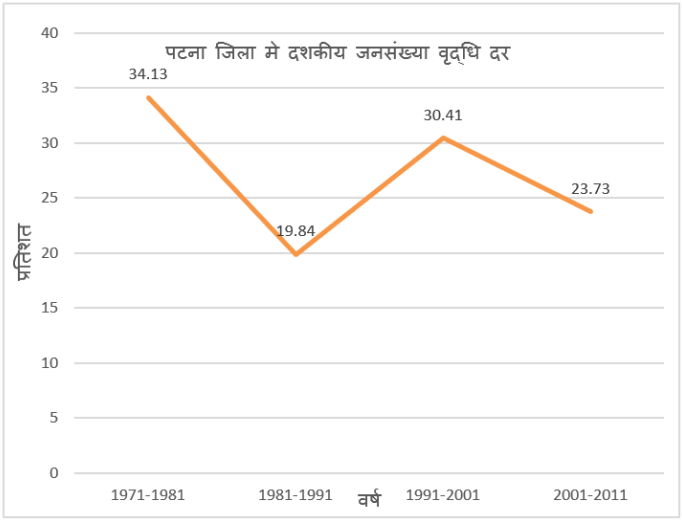

चित्र सं: 2 पटना जिला मे जनसंख्या वृद्धि दर एवं साक्षरता दर

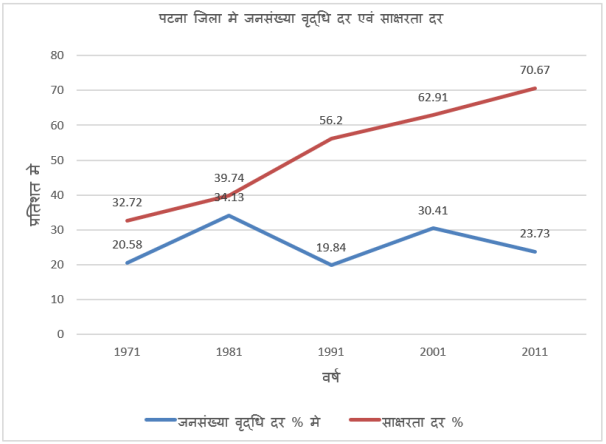

तालिका.3:

पटना जिला में विकासखंडवार साक्षरता दर ;2011द्ध प्रतिशत में

क्रम सं	विकासखंड	2011
1	पटना सदर	82.31
2	दानापुर	72.89
3	फुलवारी	74.33
4	अथमलगोला	61.98
5	बाढ़	64.09
6	खुसरुपूर	58.05
7	संपतचक	67.48
8	मनेर	60.26
9	फतुहा	61.53
10	बिहटा	70.10
11	नौबतपुर	68.08
12	मसौढी	64.37
13	बख्तियारपुर	60.31
14	दनियांवा	62.34
15	धनरूआ	60.72
16	बिक्रम	71.30
17	दुल्हिन बाज़ार	65.40
18	पुनपुन	62.50
19	पालीगंज	65.37
20	मोकामा	65.18
21	बेल्छी	57.59
22	पंडारक	59.11
23	घोसवारी	50.16
	पटना जिला	70.67

स्रोत: जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 2011

तालिका- 3 में 2011 में पटना जिला में विकासखंडवार साक्षरता दर दर्शाया गया है।

तालिका- 3 पटना जिला का विकासखंडवार साक्षरता दर जनगणना 2011 के अनुसार।

उपरोक्त तालिका-3 में यह देखा गया है कि पटना जिला की साक्षरता दर 70.67 प्रतिशत था जिसमें पुरूष साक्षरता दर 78.47 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 61.96 प्रतिशत या पटना जिला में साक्षरता दर विकासखंडवार असमान है। जैसे कुछ विकासखंड ऐसे है जिनकी साक्षरता दर अधिक है उदाहरण स्वरूप सबसे अधिक साक्षरता दर पटना शहर (82.314) में है। सबसे कम साक्षरता दर घोसवारी विकासखंड (50.16 प्रतिशत) में

है। अन्य विकासखंडों में दानापुर में 72.89 प्रतिशत फुलवारी में 74.33 प्रतिशत, विक्रय में 71.30 प्रतिशत, बिहरा में 70.10 प्रतिशत, नौबतपुर में 68.08प्रतिशत, संपतचक में 67.48 प्रतिशत, पालीगंज में 65.37 प्रतिशत, मोकमा में 65.18 प्रतिशत, हुल्हिन बाजार में 65.40 प्रतिशत, शेष विकासखंडों में तुलनात्मक रूप से साक्षरता दर कम है। तालिका संख्या-1 से स्पष्ट है कि जिला का शहरी क्षेत्र में साक्षरता दर ग्रामीण क्षेत्र से अधिक है।

जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर सापेक्ष शब्द है क्योंकि दोनों एक ही सिक्के दो पहलू है। यदि मानव संसाधनों का समुचित पोषण नहीं किया जाता है तो जनसंख्या विस्फोट किसी राज्य में साक्षरता दर को बहुत अधिक प्रमाणित कर सकता है। व्यवस्थित परिवार नियोजन और जनसंख्या नियंत्रण से स्वरूप और ऊर्जावान समाज का निर्माण किया जा सकता है। तालिका-4 से जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर के बीच संबंध देखा जा सकता है।

तालिका-4 पटना जिला में (1971 से 2011 तक) जनसंख्या वृद्धि एवं साक्षरता दर।

तालिका.4:

वर्ष	कुल जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में)	साक्षरता दर (प्रतिशत में)
1971	2250883	20.58	32.72
1981	3019201	34.13	39.74
1991	3618211	19.84	56.20
2001	4718592	30.41	62.91
2011	5838465	23.73	70.67

स्रोत :जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 1971, 1981, 1991,2001,एवं 2011

उपरोक्त तालिका-4 से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि 1971 से 2011 के दौरान पटना जिला में जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर के बीच विपरीत संबंध है। जनसंख्या वृद्धि दर का प्रतिशत की प्रवृत्ति इसी अवधि के दौरान साक्षरता में बढ़ती दर के मुकाबले उतार-चढ़ाव और घटती दर दिखाती है। 1971 और 1981 के दशक में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि सामने आयी है। जो उच्च जन्म दर एवं मृत्यु दर में ह्रास का परिणाम है। जनसंख्या वृद्धि साक्षरता दर में बढ़ती दर के मुकाबले घटती दर को दिखाती है। जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर के बीच संबंध पटना जिला का चित्र संख्या: 2 में दिखाया गया है।

चित्र- 2 पटना जिला में 1971 एवं 2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि और साक्षरता दर।

आज दुनिया भर में जनसंख्या वृद्धि की अवधारणा सभी को पता है। दुनिया जनसंख्या की अप्रतिशत वृद्ध और उसके हानिकारक प्रभाव से कई समस्याओं से ग्रसित है। किसी देश की अधिक जनसंख्या के के कारण उसे उचित शिक्षा स्वास्थ्य और पोषण, अच्छा वातावरण आश्रम, भोजन, सामान आदि जैसी कई समस्याओं का सामाना करना पड़ता है। दुनिया का हर देश अब अपनी जनसंख्या वृद्धि और उसके नियंत्रण के बारे में जागरूक है ताकि देश का सतत विकास सुनिश्चित हो सके। भारत में सरकार और कई अन्य गैर सरकारी संगठन जनसंख्या विस्फोट को नियंत्रित करने और राष्ट्र के मानव संसाधनों का समुचित विकास के लिए मिलकर काम करते है। जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा की गई पहल से 146 जिलों की पहचान किया गया है। इसके लिए मिशन परिवार विकास कार्यक्रम 2017 में शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य उच्च प्रजनन दर (टी0एफ0आर0) वाले जिलों में परिवार नियोजन सेवाओं की पहुँच और गुणवत्ता में सुधार करना है। इस कार्यक्रका लक्ष्य 2025 तक कुल पूजनन दर को 2.1 तक लाता है।

इसके लिए समाज की बुराइयों से लड़ने और किसी के लिए भी खुशहाल जीवन सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा ही मुख्य हथियार है।

इसलिए अब लोगों में शिक्षा प्राप्त करने के प्रति बहुत रूचि देखी जा रही है। इसलिए जिला हर में जिसमें विशेष रूप से ग्रामीण गरीब, पिछड़े लोगों, जिनमें एस0सी0, एस0टी0 ओ0बी0सी0 आदि शामिल है कि लिए आर0टी0आई0 2009 का सही क्रियानवयन बहुत जरूरी है।

5. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष है-

1) पटना जिला में जनसंख्या वृद्धि दर बहुत अधिक है जिससे समाज के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है।
2) हालांकि औसत साक्षरता दर में वृद्धि देखी जा रही है, लेकिन यह अपेक्षित स्तर पर नहीं है। आर0टी0ई0 2009 के क्रियानवयन में खामियों के शरण बच्चे शिक्षा के दायरे से बाहर है।

3) जनसंख्या वृद्धि दर और साक्षरता दर के बीच नकारात्मक संबंध पाया गया है। इसका अर्थ है कि अध्ययन अवधि के दौरान जनसंख्या वृद्धि में कमी के साथ-साथ साक्षरता दर में वृद्धि पाई गई है।
4) जिला में विकासखंडों के बीच जनसंख्या वृद्धि दर और साक्षरता दर में विचलन पाया गया है। कुछ विकासखंडों में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है जो साक्षरता दर के मामले में भी है और इसके विपरीत भी।
5) राज्य में लैंगिक असमानता पाई जाती है। लिंगानुपात अभी-भी 1:1 से बहुत दूर है जो कि एच0डी0आई0 का एक नकारात्मक कारक है। साक्षरता दर के मामले में पुरूष-महिला अंतर पाया जाता है अर्थात सभी दशकों के दौरान पुरूष साक्षरता दर महिला साक्षरता दर से अधिक रही है।

6. नीतिगत निहितार्थ

1) सरकार को जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर को नियंत्रित करने के लिए सभी कदम उठाने चाहिए। दो बच्चों की नीति को समाज के सभी वर्गों में अच्छी तरह से लागू किया जाना चाहिए।
2) सरकार को गैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों को मिलाकर बड़े पैमाने पर प्रयार-प्रसार करके स्थानीय लोगों को जागरूक करना चाहिए जो जनसंख्या नीति से अनजान है मीडिया ने इस संबंध में सकारात्मक और सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
3) ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म नियंत्रण के लिए उचित चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। महिलाओं को निष्क्रिय पारिवारिक मानदंडों के प्रति प्रेरित किया जाता चाहिए जो जनसंख्या नीति को लागू करने में सकारात्मक रूप से काम कर सकते है।
4) सरकार को आर0टी0ई0 2009 की सही तरीके से लागू करना चाहिए विशेष तौर पर उन इलाकों में जहां अभी तक इसकी पहुंच अभी तक नहीं हो पाया है।
5) ग्राम स्तरीय शैक्षणिक संस्थान विशेषकर उच्च शैक्षणिक संस्थान गांव-गांव आकर संक्षित समूह को जन्म नियंत्रण के साथ-साथ अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित करने की पहल कर सकते है।

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनसंख्या वृद्धि और साक्षरत एक-दूसरे से जुडत्रे हुए है। जब तक किसी देश की आबादी को उचित शिक्षा नहीं दी जाती, तब तक कोई भी नीति ठीक से काम नहीं करेगी। यदि जनसंख्या को स्वयं नियंत्रित नहीं किया जाता तो उसे नियमित नहीं किया जा सकता है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का परिणाम एवं असुविधाओं को ललित समूह को स्वयं महसूस करना चाहिए। अंत में पटना जिला में जनसंख्या और साक्षरता दर पर वर्तमान अध्ययन यह दर्शाता है कि जिला की साक्षरता दर कम होने के लिए जनसंख्या विस्फोट प्रमुख रूप से जिम्मेदार है। राज्य द्वारा जनसंख्या नियंत्रण के लिए हुई योजनायें और कार्यक्रम चलाये जा रहे है लेकिन ऐसा लगता है कि वे बिल्कुल भी नहीं काम कर रहे हैं इसके लिए सख्त और व्यवस्थित योजना बनाता आवश्यक है। किसी राज्य की शिक्षा के विकास के लिए सरकार को व्यवस्थित और वैज्ञानिक योजना, कार्यक्रम निति और उचित नियोजन शुरू करना चाहिए

संदर्भ ग्रंथ

Abha, M. (2018). Illiteracy and population growth: A study of Kerala and Bihar. The Journal of Indian Management and Strategy, 23(2).
Chalapatli, et al. (2008). Knowledge society and population. The Indian Journal of Population Science.
Chandna, R. C. (2016). Geography of population: Concepts, determinants and patterns. New Delhi: Kalyani Publishers.
Directorate of Economics and Statistics. (2010, 2012, 2014, 2015, 2017). Statistical handbook of Bihar. Government of Bihar.
Ganguli, B. N. (1953). Bhudki: A study of Indian rural structure. New Delhi: Orient Longman.
Government of Bihar. (2009, 2010, 2015, 2016). Economic survey of Bihar. Finance and Statistical Department.
Hussain, M. (2015). Human geography. Jaipur: Rawat Publications.
Sharma, H. N. (2012). Demography and population studies in India. New Delhi: Concept Publishing Company.
Singh, R. L. (1971). India: A regional geography. Varanasi: National Geographical Society of India.
Weeks, J. R. (2011). Population: An introduction to concepts and issues. Belmont, CA: Wadsworth.
Zelinsky, W. (1971). The hypothesis of the mobility transition. Geographical Review, 61(2), 219–249.
जिला जनगणना हस्तपुस्तिका. (1971, 1981, 1991, 2001, 2011). भारत सरकार, भारत की जनगणना.
जिला सांख्यिकी पत्रिका. (1971). पटना: बिहार सरकार.